Tender Heart High School, Sector - 33 - B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं
दिनांक - 08 अप्रैल, 2024

विषय - हिन्दी साहित्य
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : साहित्य सागर

पाठ - 1 'बात अठन्नी की' (कहानी) लेखक - सुदर्शन

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य सागर' की पृष्ठ संख्या छह पर दिए पाठ-1 'बात अठन्नी की' नामक कहानी का अध्ययन करेंगे।

बच्चा ! आप सभी अपनी-अपनी पुस्तक 'साहित्य-सागर' में दिए पाठ-1 'बात अठन्नी की' खोल लें और हिन्दी की उत्तर-पुस्तिका भी निकाल लें। मैं पाठ को समझाते समय आपसे कुछ प्रश्न भी पूछूँगी। उन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आपका पाठ को ध्यानपूर्वक सुनना एवं समझना आवश्यक है। आशा करती हूँ कि अब आप पढ़ने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हैं।

'बात अठन्नी की' कहानी के लेखक सुदर्शन जी हैं। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त बेईमानी, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचारी और न्याय व्यवस्था पर करारा प्रहार किया है। समाज में उच्च पद पर काम करने वाले अफसर रिश्वत लेकर भी सम्मानित जीवन व्यतीत करते हैं जबकि एक निर्धन व्यक्ति केवल एक अठन्नी की हेरा-फेरी करने के जुर्म में छह महीने की सज़ा भोगते हैं। अतः इस कहानी के द्वारा कथाकार सुदर्शन जी ने समाज के कड़वे सच का परिचय करवाया है।

आइए! अब इस कहानी के मुख्य पात्रों के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

(क) रसीला - रसीला इस कहानी का मुख्य पात्र है। वह इंजीनियर बाबू जगत सिंह के यहाँ दस रुपए मासिक वेतन पर काम करता है। गाँव में उसके बूढ़े पिता, पत्नी, दो लड़के व एक लड़की थे। इन सबका भार रसीला के कंधों पर था। वह सीधा व सरल स्वभाव का था। इसके अतिरिक्त वह ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, परिश्रमी एवं संकोची स्वभाव का था।

(ख) रमज़ान - रमज़ान जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के यहाँ चौकीदार था। वह रसीला का सच्चा मित्र था। वह दयालु स्वभाव का था। उसने अपने मित्र की कठिन समय में मदद की थी। उसमें सहयोग की भावना थी। अपने मालिक का रिश्वत लेना उसे अच्छा नहीं लगता था। रसीला को अठन्नी की चोरी में छह महीने की सज़ा होने पर वह क्रोधित होता है परन्तु कुछ नहीं कर पाता।

(ग) बाबू जगत सिंह - बाबू जगतसिंह इंजीनियर हैं। समाज में उनका सम्मान है, परन्तु वे ईमानदार नहीं हैं। वे लोगों से रिश्वत लेकर उनका काम करवाते हैं। वे लालची तथा उग्र स्वभाव के हैं। उनमें दयालुता का अभाव है। वे मिठाई के शौकीन हैं। वे रसीला द्वारा आठ आने की हेरा-फेरी करने पर उसे पीटते हैं तथा सिपाही को पाँच रुपए देकर रसीला के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करने को कहते हैं। अतः वे एक लालची, कंजूस और ख़ुदगर्ज़ व्यक्ति हैं।

(घ) शेख सलीमुद्दीन - शेख सलीमुद्दीन जिला मजिस्ट्रेट थे। वे जगत सिंह के पड़ोसी एवं रिश्वतखोर थे। वे फलों के शौकीन थे। वे अपने लाभ के अनुसार न्याय करते थे। न्याय करते समय वे अपने विवेक का प्रयोग नहीं करते थे। यही कारण है कि रसीला के माफ़ी माँगने पर भी एवं पहली गलती होने पर भी वे उसे छह महीने की सज़ा सुना देते हैं।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-1 'बात अठन्नी की')
Date 8/4/24
Page 3

बच्चो! अब हम इस पाठ को विस्तार से समझेंगे। आपका ध्यान इस ओर ही केन्द्रित होना आवश्यक है।

रसीला जो इस कहानी का मुख्य पात्र है, बाबू जगत सिंह के यहाँ कई सालों से नौकर था। उसे प्रतिमाह दस रुपए वेतन (मासिक तनख्वाह) मिलता था। उसका परिवार गाँव में रहता था जहाँ उसके बूढ़े पिता जी, उसकी पत्नी, एक लड़की और दो लड़के थे। इन सब की ज़िम्मेदारी रसीला के कंधों पर थी। वह अपनी सारी तनख्वाह घर भेज देता था तब भी उसके परिवार का गुज़ारा नहीं हो पाता था। रसीला बार-बार बाबू जगत सिंह से वेतन बढ़ाने की प्रार्थना करता था परन्तु जगत सिंह हर बार यह कहकर ठुकरा देते कि अगर तुम्हें कोई ज्यादा देता है तो अवश्य चले जाओ। मैं तनख्वाह नहीं बढ़ाऊँगा।

रसीला यदि कहीं दूसरी जगह नौकरी करने की सोचता तो उसे यह लगता कि यहाँ मुझ पर कभी किसी ने संदेह नहीं किया। यहाँ से यदि मैं गया तो वहाँ उसे ग्यारह-बारह रुपए वेतन मिल भी जाएँ पर ऐसा आदर न मिलेगा। इसलिए वह इस प्रकार की बात मन में लाता ही नहीं था।

जिला मजिस्ट्रेट (अदालत का अफ़सर) शेख सलीमुद्दीन इंजीनियर बाबू जगत सिंह के पड़ोस में रहते थे। रसीला एवं उनके चौकीदार रमज़ान में गहरी दोस्ती थी। दोनों घंटे साथ बैठकर बातें किया करते थे। बाबू जगत सिंह मिठाई के शौकीन थे तथा शेख साहब फल खाने के शौकीन थे इसलिए रसीला रमज़ान को मिठाई खाने को देता था तथा रमज़ान रसीला को फल खाने के लिए देता था।

एक दिन रमज़ान ने रसीला को उदास देखा और उससे उसकी उदासी का कारण पूछा। पहले तो रसीला अपनी उदासी का कारण रमज़ान से छिपाता रहा फिर रमज़ान ने रसीला को अपनी सौगंध (कसम) खिलाई तो रसीला को रमज़ान का इस प्रकार हठ करते देख आँखें भर आईं (आँखों में आँसू आना) उसने रमज़ान को बताया कि गाँव

चिट्ठी (खत) आई है। उसके बच्चे बीमार हैं और इलाज के लिए पैसे भी माँगे हैं। रमज़ान ने रसीला को बाबू जगतसिंह से पेशगी (पहले दिया जाने वाला धन) माँगने की सलाह दी तो रसीला ने बताया कि उन्होंने एक पैसा भी देने से साफ़ इन्कार कर दिया है।

रमज़ान ने रसीला की समस्या सुनकर ठण्डी साँस भरी। रमज़ान से रहा नहीं गया। उसने रसीला को रुकने का इशारा किया और स्वयं कोठरी में चला गया। थोड़ी देर बाद जब वह अपनी कोठरी से लौटा तो उसने रसीला की हथेली पर कुछ रुपए लाकर रख दिए। रसीला यह देखकर कुछ न बोल सका। उसने सोचा कि रमज़ान ने गरीब होकर भी उसकी मदद की है। उसे लगा बाबू जगत सिंह की उसने इतनी सेवा की परन्तु उन्होंने दुःख में साथ नहीं दिया। उसने रमज़ान की तुलना देवता से की एवं उसे दुआएँ भी दी। अतः रमज़ान ने रसीला को पैसे देकर उसकी समस्या का समाधान किया।

रसीला के बच्चे स्वस्थ हो गए। रसीला ने रमज़ान से जो पैसे कर्ज़ के रूप में लिए थे, लौटा दिए केवल आठ आने बाकी रह गए। रमज़ान ने रसीला से कभी पैसे नहीं माँगे थे। लेकिन रसीला उससे आँखें नहीं मिला पाता था।

एक दिन इंजीनियर बाबू जगत सिंह किसी से कमरे में बात कर रहे थे। रसीला ने सुना तो बाबू जगतसिंह कह रहे थे कि बस पाँच सौ रुपए! इतनी सी रकम देकर आप मेरा अपमान कर रहे हैं। एक व्यक्ति अपने काम के लिए बाबू जगत सिंह को रिश्वत के रूप में पाँच सौ रुपए देने की बात कर रहा था लेकिन बाबू जगत सिंह की दृष्टि में यह बहुत कम रकम थी। उन्हें लग रहा था कि इतने कम पैसे देकर वह व्यक्ति उनका अपमान कर रहा है। अर्थात् इतनी कम रकम लेकर काम करने में वे अपना अपमान महसूस कर रहे थे। वही व्यक्ति फिर से बाबू साहब को इतने पैसों में ही मान जाने के लिए कहता है और बाबू साहब से कहता है कि आप यह समझें कि आपने मेरा काम मुफ़्त किया है।

बाबू जगत सिंह की यह बात जब रसीला ने सुनी तो वह समझ गया कि भीतर रिश्वत ली जा रही है। एक व्यक्ति बाबू जी को काम करने के लिए पाँच सौ रुपए की रिश्वत देने को तैयार है परन्तु बाबू साहब को यह रकम बहुत छोटी लग रही है। आज रसीला को उच्च वर्ग के बाबू जगत सिंह ईमानदारी का मुखौटा पहने बंद कमरे में रिश्वत लेकर काम करते दिखाई दिए। वह सोचने लगा कि रुपए कमाने का यह कितना आसान तरीका है। मैं सारा दिन परिश्रम करता हूँ तब जाकर एक महीने में दस रुपए ही हाथ आते हैं। इंजीनियर साहब की रिश्वत की बात सुनकर रसीला ने बाहर आते ही सारी बात रमज़ान को बताई। रसीला की बात सुनकर रमज़ान ने बताया कि यह तो इतनी-सी बात है। हमारे शेख साहब तो इंजीनियर साहब के भी गुरु हैं। आज भी उन्होंने एक व्यक्ति से कम से कम हज़ार रुपए रिश्वत के तय किए हैं। रमज़ान ने कहा कि गुनाह का फल मिलता है या नहीं यह भगवान ही जानता है पर रिश्वत आदि गलत तरह से काली कमाई करने वाले कोठियों में चैन से रहते हैं। हम जैसे परिश्रमी व्यक्तियों के हाथ में कुछ नहीं रहता।

बच्चो! आपने इस पाठ को अच्छा पढ़ एवं समझ लिया है। अब आप अपनी ऑडियो को तीन मिनट के लिए विराम देकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न 1. रसीला कहाँ काम करता था? उसे कितनी तनख्वाह मिलती थी?

प्रश्न 2. रमज़ान कौन है? उसने रसीला को ठहरने का संकेत क्यों किया?

प्रश्न 3. एक दिन रसीला ने क्या सुना?

बच्चो! विराम का समय समाप्त हो चुका है। आशा है कि आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर लिख लिए होंगे। अब मैं आपको उन्हीं प्रश्नों के उत्तर बताने जा रही हूँ, जो इस प्रकार हैं :-

उत्तर 1. रसीला इंजीनियर बाबू जगतसिंह के यहाँ कई सालों से काम करता था। उसे प्रतिमाह दस रुपए वेतन मिलता था। इन रुपयों को वह अपने परिवार के खर्चे के लिए गाँव भेज देता था।

उत्तर 2. रमज़ान जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन के यहाँ चौकीदार था। रसीला ने रमज़ान को बताया कि गाँव में उसके बच्चे बीमार हैं। उनके इलाज के लिए रुपए भेजने हैं और बाबू जगत सिंह ने भी मदद करने से मना कर दिया है तो रसीला की बात सुनकर रमज़ान ने रसीला को ठहरने का संकेत दिया और स्वयं रुपए लेने कोठरी में चला गया।

उत्तर 3. एक दिन रसीला ने बाबू साहब को घर पर किसी व्यक्ति से बात करते हुए सुना कि पाँच सौ रुपए देकर आप मेरा अपमान कर रहे हैं। उनकी बात सुनकर वह व्यक्ति बोला - 'हुज़ूर मान जाइए। आप समझें, आपने मेरा काम मुफ़्त किया है।

बच्चो! आज हम अपने इस पाठ को यहीं समाप्त करते हैं। आशा है कि आप सभी ने पाठ को रुचिपूर्ण ढंग से पढ़ा एवं समझा होगा। पाठ के शेष भाग को हम अगले सप्ताह पढ़ेंगे। अब मैं आपको गृहकार्य दे रही हूँ। इस कार्य को आप पाठ की सहायता से करेंगे। दिए गए गृहकार्य को सभी छात्र अपनी-अपनी साहित्य की उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।

गृहकार्य

(क) सभी छात्र आज पढ़ाए गए पाठ को दो बार पढ़ेंगे एवं पूर्णतया समझने का प्रयास भी करेंगे। पढ़ते समय सभी छात्र शब्दों का शुद्ध उच्चारण करेंगे।

कक्षा - नौवीं शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा
विषय - हिन्दी साहित्य (पाठ-1 'बात अठन्नी की')

(ख) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"अगर तुम्हें कोई ज्यादा दे तो अवश्य चले जाओ। मैं तनख्वाह नहीं बढ़ाऊँगा।" (पाठ्य पुस्तक पृष्ठ संख्या 6)

प्रश्न (i) वक्ता कौन है ? उसका परिचय दीजिए। उसने उपर्युक्त वाक्य किस संदर्भ में कहे हैं ?

प्रश्न (ii) रसीला किसके यहाँ काम करता था ? उसने अपने मालिक से क्या प्रार्थना की ?

प्रश्न (iii) श्रोता कौन है ? उसने तनख्वाह बढ़ाने की प्रार्थना क्यों की ?

प्रश्न (iv) वेतन न बढ़ने पर भी रसीला बाबू जगत सिंह की नौकरी क्यों नहीं छोड़ना चाहता था ?

धन्यवाद।